163 (P)
927
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1538
10/01

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 927

B/201

891.431
P886R

* सर्वाधिकार सुरक्षित है *

राष्ट्रीय बिगुल

927

500

लेखक व प्रकाशक

पं० द्वारका प्रसाद

हारमोनियम मास्टर

छुटमलपुर, जिला-देहरादून

प्रथमबार २००० | जून १९३० | कीमत -)

गुरुकुल प्रेस, कनखल में छपी।

Dhan.. ...

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 927
Date 27-12-71
GOVT. OF INDIA

ॐ

राष्ट्रीय बिगुल

बन्दे मातरम् ।

प्रार्थना

हे दयामय ईश ! गांधी को सफलता दीजिये ।
देशके उद्धार में बलवान उनको कीजिये ॥

स्वातंत्रता के युद्ध में विजयी करो हे देव तुम ।
ईश इस संसार को जल्दी सुखी अब कीजिये ॥

है बहुत भारत विकल दुष्टों के अत्याचार से ।
कर कृपा उन जालिमों की शुद्ध बुद्धी कीजिये ॥

नाथ ! गोपीनाथ की विनती यही कर जोड़कर ।
देश के संताप को अब शीघ्र ही हर लीजिये ॥

ग़ायन नं० २

स्वदेशी बदन पे सजाया करेंगे।
विदेशी की होली जलाया करेंगे॥
सजायेंगे खद्दर से अपने बदन को
बनायेंगे आज़ाद अपने वतन को
स्वदेशी असन हो स्वदेशी बसन हो।
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो॥
स्वदेशी गले से लगाया करेंगे॥ विदेशी०
गुलामी की जंजीर को तोड़ देंगे।
जुल्मों सितम का घड़ा फोड़ देंगे।
रफ़ाक़त विदेशी की हम छोड़ देंगे।
फैशन परस्ती से मुंह मोड़ लेंगे॥
आज़ादी का डंका बजाया करेंगे।
खुशामद किसी की न जाके करेंगे
हक़ीकी हकों पै लड़ेंगे मरेंगे।
वतन के लिये हम मुसीबत सहेंगे।
डरेंगे न दिल में जो सच है कहेंगे॥
खुशी से सरों को कटाया करेंगे।

हमें गांधी बाबा ने अब तो जगाया।
था तुमने हमारे हकों को दबाया।
बहुत घर को हमने अभी तक लुटाया।
है सत्याग्रह में क़दम को बढ़ाया।
तराना आज़ादी का गाया करेंगे॥

गायन नं॰ ३

अब ना तेरे गुलाम कहायेंगे हम।
अपना भारत आज़ाद करायेंगे हम
बहुत ही तंग आगये अब जुल्म की रफ़्तार से
हो नहीं सकती तसल्ली आपके इकरार से
—झूठे वादों पे घर न लुटायेंगे हम।
हर तरह हमने तुम्हारी आज तक बातें सहीं।
अब ज़ुल्म सहने की ताक़त इन दिलों में न रही॥
—हस्ती अपनी न ऐसी मिटायेंगे हम
जिस वतन का अन्न खाया जिस के पाले से पले
क्यों ना हो दिल में मुहब्बत क्यों कटायें न गले।
—अपने देश का मान बढ़ायेंगे हम।
जो वतन का प्यार अपने दिल में कुछ करता नहीं।
जो वतन के वास्ते कुर्बान हो मरता नहीं।

उसे पास न अपने बिठायेंगे हम
छोड़ कर फैशन विदेशी, प्रेम खद्दर से करें ।
सब स्वदेशी वस्तु का प्रचार हम घर में करें ।
अपने तन पे स्वदेशी सजायेंगे हम

गायन नं० ४

तर्ज—बीड़ी पान पान की

लेंगे लेंगे जी स्वराज्य शूली चढ़ २ के
शूली चढ़ २ के फांसी चढ़ २ के
भारत को आज़ाद करेंगे
सहें डंडों की मार आगे बढ़ २ के
सत्याग्रह है शस्त्र हमारा
होंगे २ जी निसार अब तो लड़ २ के ॥ लेंगे०
देश हमारा प्राण पियारा
कैसा हुआ हैं बेज़ार दुख में पड़ पड़ के
बेकसूर बिन मौत मरे हैं ।
जेल के भीतर सड़ सड़ के
निर्बल जनता पर हा छूटें
गोली मशीनों पर चढ़ २ के

गायन नं० ५

बनाओ स्वदेशी चलन धीरे २
हो आज़ाद अपना वतन धीरे २
बनो वीर अर्जुन से मैदान आओ
मिटावें जुलम व सितम धीरे २
न छोड़ें वतन की मुहब्बत दिलों से
बढ़ायेंगे अब तो कदम धीरे २
बजाओ बिगुल सत्याग्रह का खड़े हो
उठो मिल के भाई बहिन धीरे २
खुशी से वतन पे मरेंगे मिटेंगे
करेंगे मुसीबत सहन धीरे २
हो खद्दर से प्रीती, विदेशी से नफ़रत
सुनो गांधी जी का कहन धीरे २

ग़ज़ल ६

तीरथ से बढ़के होगा वीरों को जेलख़ाना।
अब तो गुलाम भारत आज़ाद है बनाना॥
मरना हमें है आता डरते नहीं कज़ा से।
तू अपने ख़ंजरों को अब ख़ूब आज़माना॥
भारत में हम पले हैं भारत का अन्न खाकर।
गायें भला न हम क्यों भारत का फिर तराना॥

धन धाम सब लुटाया तेरे लिये सितमगर ।
फिर भी तुझे न आया वर्ताव आजिज़ाना ।
दबते रहे जहां तक हम तेरी हरकतों से ।
इतना ही चढ़ गये सर बन कर के ज़ालमाना ॥
दिखला न तू मशीनों का खौ़फ़ हम को ज़ालिम ।
सर से कफ़न को बांधे अब फिर रहा ज़माना ॥
अवतार लेके हम को भगवान ने जगाया ।
जेलों में छिप रहा स्वराज्य का ख़ज़ाना ॥

ग़ज़ल ७

जुल्म की हद हो रही ज़ालिम तेरी रफ़्तार से ।
देखना पछतायेगा इस जुल्म की तकरार से ॥
है हमारा देश भारत प्राण से प्यारा हमें ।
क्या ख़ता की मांगली आज़ादगी सरकार से ॥
आये थे महमान बन कर तुम हमारे देश में ।
कर रहे जुल्मों सितम अब बेकसों पर मार से ॥
हमने सर तक भी कटाये थे तुम्हारे वास्ते ।
आज तक बोले न थे कुछ भी तेरे इक़रार से ॥
पर हमें बदले में तुम से राहतें ऐसी मिलीं ।
कर दिया बरबाद हमको हर तरह घर बार से ॥

फूलते फलते नहीं ज़ालिम कभी इस बाग़ में।
आह में ज्यादा असर है इस तेरी तलवार से॥
कंस के जुल्मों सितम ने जब किया भारत को तंग।
मिट गई हस्ती सभी बस कृष्ण के अवतार से॥
तू भी अब क़ातिल संभल कर देखले क्या हो रहा।
कट रहे लाखों ही सर तेरे फ़क़त हथियार से॥
खूं शहीदों का कभी रंग लायेगा तू देखना।
क्या मज़ा मिलता है तुझको तेरे अत्यचार से॥
तू मिटा हम को चहे जितना मगर हम चुप खड़े।
खुद सज़ा तू पायेगा ख़ालिक़ के उस दरबार से॥

गाना ८

(भारत वीरों की बधाई)

धन धन है उन्हें जो भारत पे अपना तन मन धन वार रहे।
भारत के लिये कुरबान हुये भारत के लिये बेज़ार रहे॥
दुख देख ग़रीबों का दिल में छाया है वतन का जोशे जनूं।
उस तरफ़ सितम की तेग़ रहे इस तरफ़ वतन का प्यार रहे॥
मिट गये वतन की उलफ़त में धन धाम छुटा घर बार तजा।
है दर्द वतन का सीने में हर वक्त दिले बीमार रहे॥
जिस दिल में वतन का जोश नहीं वो सोये हुये उन्हें होश नहीं।
उन के जीवन पे लानत है उन्हें बार बार धिक्कार रहे॥

भारत वीरों ने खून बहा भारत का मान बढ़ाया है।
अब बीर जवाहर गांधी से भारत की नैय्या तार रहे॥
हैं वीर वही रनधीर वही जो देश पै जान निसार करें।
आज़ादी को दिल में है लगन भारत के लिये बलिहार रहे॥
जब भारत का बच्चा २ और मातायें बहनें तक भी। मिल
कर के जोर लगायेंगे फिर कैसे गुलामी सवार रहे॥

भजन ९

गांधी बाबा ने अबतो उजाला कर दिया।
देश भारत का फिर से बोल बाला कर दिया॥
झंडा गाड़ा आज़ादी का मैदान में,
दिल हिलाया है यूरप का यक तान में।
एक चर्खे में फैशन का दिवाला कर दिया॥ १॥
लगे खद्दर पहिरने बड़े से बड़े,
जो थे फैशन परस्ती के पीछे पड़े।
क़ौमी गानों ने सबको मतवाला कर दिया॥ २॥
जारी सत्याग्रह अबतो जाकर किया
अपने बल से नमक कर पे कब्जा लिया।
राग अबतो किसी का बेताला कर दिया॥ ३॥
क्या २ करता जुलम है दुःशासन भला,
देखिये रंग लाती है दुनियां भी क्या।
द्वारकानाथ ने ढंग निराला कर दिया॥ ४॥

गजल १०

बहनो खद्दर पहन के नहाया करो।
कभी गंगा नहाने जो आया करो॥
आन कर गंगा पे फैशन का बनाना छोड़ दो
धारिये खद्दर, बदन नंगा दिखाना छोड़ दो
धर्म अपना न ऐसा गवाया करो।
हो रहा बरबाद भारत कट रही गौवें हजार
आंख खोलो हिन्दवालो किस तरह होतेहो ख़्वार
अपने बच्चे न भूखे सुलाया करो।
हो गुलामी में फंसे इन फैशनों के प्यार से
लुट गया सारा खजाना आप के घरबार से
हस्ती अपनी न ऐसी मिटाया करो।
हो रहे कुर्बान देखो लाल भारत के जिगर
सैकड़ों बुलबुल कफ़स में फस रहीं जालिम के घर
वीरो अपना न नाम लजाया करो।
द्वारका के नाथ रक्षक हैं न घबराओ कभी
कौम की खिदमत में तनमन से जो लग जाओ सभी
फिर ना खून के आंसू बहाया करो।

भजन ११

फैशन का डङ्का भारत में बजवा दिया यूरुप वालों ने।
घर घर में ला तङ्गदस्ती को बिठला दिया यूरुप वालोंने ॥
खद्दर पर टैक्स लगाया है रेशम सस्ता बिकवाया है।
हिलजुल मलमल से सबका दिल लुटवा दिया यूरुप वालोंने।
ने ॥ नर नारी फैशनके मारे क्या छोटे और बड़े सारे।
फैशन का दिवाना सब को बनवा दिया युरुप वालोंने ॥
फैसन से लेडी चलती हैं हाथों में घड़ियां सजती हैं।
आंखों पर चश्मा हर इक के लगवा दिया यूरुप वालोंने ॥
फैसन के साहब मतवाले पतलून कोट ने छल डाले।
और उलट केप को सबके सिर रखवा दिया यूरुप वालों
ने ॥ फैसन ने हवा चलाई है घर घर में आग लगाई है।
भारत का बेड़ा गारत कर डुबवा दिया यूरुप वालों ने ॥

भजन १२

तर्ज—अन्दली बेजार को।

जुल्मों सितम को कब तलक जालिम बता सहा करें।
अपने जिगर के जख्म की कब तक न हम दवा करें ॥
सीखा नहीं है तुमने जब करना रहमा गरीब पर।
दर पै तुम्हारे जाके क्या अपना दरद बयां करें ॥

दिल के गुबार एक दिन लायगे रङ्ग आसमां
हाफिज खुदा है देखना तेरे गुनाह क्या करें ॥
हम तो हैं ना तवां मगर रहमत प्रभु की चाहिये ।
आयेगा वह भी एक दिन तेरा गुमाँ फना करें ॥
हममें नहीं है सङ्गठन इकसे है इक जुदा हुवा ।
अपना ही सब कसूर है फिर तेरा क्या गिला करें ॥
मरते रहेंगे हिन्द की उल्फत में तेरे तीर से ।
प्यारा आजाद हिन्द हो दिल से यही दुआ करें ॥

स्त्री का पति को उपदेश १३

तर्ज—रसिया

बाबू खद्दर पहर के आना रोटी जभी पकाऊंगी
रोटी जभी पकाऊंगी प्रेम से तभी खिलाऊंगी
फैशन छोड़ो पिया विदेशी तन पे वस्त्र धारो स्वदेशी
सेवा करो वतन की आने बलि बलि जाऊंगी ॥ बाबू०
साड़ी खद्दर मुझे मंगादो रंग केशरी उसे रंगादो
नाम लिखा दो सत्याग्रह में नमक बनाऊंगी ॥ बाबू०
जो न कहना सुनो हमारा तो हम से फिर करो किनारा
घर पे जो आवोगे हृदय नहीं लगाऊंगी ॥ बाबू
भारत पर तन मन धन वारो छोड़ विदेशी खद्दर धारो
वतनके वीर प्राण देदीजे खुशी मनाऊंगी ॥ बाबू ॥

चर्खा भी बाजार से लाना तुम भी मिलकर उसे चलाना
सूत कात कर अपने सारे वस्त्र सिलाऊंगी ॥ बाबू०

करो स्वदेशी अपना बाना भारत है स्वतन्त्र बनाना ।
मिलके हों बलिदान देशपर शीश पर चढ़ाऊंगी ॥ बाबू०

धर्म हमारा यही पुकारे काटो फंद गुलामी सारे
नाथ द्वारका रक्षक होंगे क्यों घबराऊंगी ॥ बाबू०

तर्ज पंजाबी १४

प्यारा हिन्दुस्तान हमारा कहते हंस २ के

खुलगई अबतो आंख हमारी सुन२ झूंठी बात तुम्हारी
अब तक बहुत करी लुट मारी जाओ नस २ के

अपना हक हकीकी लेते तुम क्यों लालच करते देते
इस में हर्ज कौन कहने से क्यों ना बोले चस्के

हमको आखें न दिखलाना हम भी समझ गये मरजाना
चाहे कितने तीर चलाना सीने कस कस के

इन्साफ जरासा करिये, खुदगर्जी से ना मरिये
रबसे हरदम साहब डरिये जगदे विच बसके

हमतो फूट बेल ने मारे होरहे भाई जुदा हमारे
इससे सहते जुल्म तुम्हारे अपनी करनी फंसके

भजन १५

तर्ज बरना करगी आहोज़ारी ।

उठो भारत की नरनारी आलस को छोड़ खुमारी
धर्म का डङ्का बजे तुम्हारा जाग उठे महि मंडल सारा ।
बस हिम्मत देख तुम्हारी, आलस०

ज़ुल्म की हस्ती मार भगाओ, अमन चमन का रङ्ग
खिलाओ । बस हिम्मत देख तुम्हारी, आलस०

प्रेम पियाला सबको पिलाना, आपस में आनन्द मनाना ।
द्वेस भाव मन मारी, आलस०

अपने देशसे प्रीती करना, चाल विदेशी देखन चलना ।
हो स्वतन्त्र अधिकारी, आलस०

सब संकट सब तन पर सह लीजे । पर गुलाम बन मौज
न कीजे ॥ कह बये बुजुर्ग, पुकारी, आलस०

सब मिल करके जोर लगाओ । भारत को आज़ाद
बनाओ ॥ बनकरके बलधारी, आलस०

अर्ज द्वारका की सुन लेना, प्राण जांय पर धर्म न देना ।
ज़ुल्म सहो मत भारी, आलस० ॥

बीर जितेन्द्रदास का पैगाम

गज़ल १६

पैगाम हिन्द वालों अपना सुना रहा हूं।
भारत के नौजवानों तुम को जगा रहा हूं॥
भारत की सारी बहनों और भाइयों हमारे।
दुनियां से कर किनारा सुरलोक जा रहा हूं॥
आंसू न तुम बहाना मेरी लहत पर जाकर।
कुछ काम कर दिखाना सब को बता रहा हूं॥
जल कर चिता से मेरी आज़ादगी के शोले।
निकलेंगे देख लेना। स्मरण दिला रहा हूं॥
है आत्मा अमर सब और है शरीर नश्वर।
उपदेश ज्ञान गीता जपना सिखा रहा हूं॥
कुछ दिन की मुश्किलें हैं हंस २ के झेल लेना।
गिरना कभी न देखो मरकर दिखा रहा हूं॥
खद्दर प्रचार करना फैशन का नाश करना।
इस से स्वराज होगा इक दिन सुझा रहा हूं॥
मत छोड़ना धर्म को हो आफतें ही कितनी।
कस कर कमर खड़े हो बीरो उठा रहा हूं॥
हैं नाथ द्वार का के रक्षक तुम्हारे सर पर।
खातिर वतन की मरना कह करके जा रहा हूं॥

और भी पढ़िये

हमारी बनाई हुई दिलचस्प भजनों की पुस्तकें ।

कृष्ण कीर्तन	≡)
कृष्ण सुदामा	≡)
मनोहर गायन	=)
मोहन मंगल	≡)
प्यारा धर्म ड्रामा	≡)
ज़ख्मी बुलबुल	-)
प्रेमरस गायन	-)
भक्तीरस गायन	-)
पवित्र भजनावली	≡)

पुस्तक मिलने का पताः—

पं० द्वारका प्रसाद,

छुटड़पुर,

ज़िला देहरादून ।